PGCBHT

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2018

(जनवरी 2018 और जुलाई 2018 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2018

(जनवरी 2018 और जुलाई 2018 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.बी.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2018 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2018 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	31.03.2018	30.09.2018
एम.टी.टी.-002 बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	31.03.2018	30.09.2018
एम.टी.टी.–003 बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	31.03.2018	30.09.2018

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम / कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर : ....
अध्ययन केंद्र का नाम:	तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। बांग्ला और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसम्बद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी–001)

सत्रीय कार्य
वर्ष 2018

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी–001
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए।

1. प्रमुख भारतीय भाषा–परिवारों का परिचय दीजिए और भारतीय भाषाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 10
2. बहुभाषी समाज में अनुवाद के विविध क्षेत्रों का परिचय दीजिए। 10
3. बहुभाषिकता के हानि–लाभ को लेकर बहस के विविध आयामों पर विचार कीजिए। 10
4. भारतीय भाषाओं की शब्दावली संबंधी समानताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10
5. वाक्य के प्रमुख लक्षणों का विश्लेषण कीजिए। 10
6. भारतीय भाषाओं की साहित्यिक प्रवृत्तियों और काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 10
7. भाषिक प्रक्रिया के रूप में अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 10
8. आशु अनुवाद की उपयोगिता, सीमाओं और संभावनाओं पर विचार कीजिए। 10
9. मशीनी अनुवाद की अवधारणा, प्रक्रिया और विधियों की चर्चा कीजिए। 10
10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 5x2=10

    (क) अनुवाद का पुनरीक्षण
    (ख) अनुवाद में स्रोत और लक्ष्य भाषा की समतुल्यता

बांग्ला-हिंदी अनुवादः तुलना और पुनर्सृजन (एमटीटी-002)

कार्यक्रम कोडः पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोडः एमटीटी-002

पूर्णांकः 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

10÷2=20

1. बांग्ला और हिंदी की सामाजिक-सांस्कृतिक बनावट को समझाते हुए दोनों में भाषिक समानता बताइए।

अथवा

बांग्ला से हिंदी में अनुवाद करते समय किस प्रकार समान लगने वाले शब्दों के अर्थ भ्रम पैदा करते हैं, समझाइए।

2. मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानी बरतनी पड़ती है, उदाहरण सहित समझाएं।

अथवा

कविता का अनुवाद कहानी के अनुवाद से किस प्रकार अलग होता है, उदाहरण सहित समझाएं।

3. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी में पर्याय लिखें- 10

মুহূর্ত	আর্তনাদ	চারপাশে	একেবারে	অন্যরকম
কখন	ঘুমেছে	রক্তাক্ত	সকালে	ওদের
নেভালো	হতভম্ব	অসহায়	পিছনে	ঘোরান
পরলে	লুকলো	প্রাণ	এদিক-ওদিক	রাগ

4. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखें- 10

बात	परिधान	आंगन	विमर्श	आलोचना
व्यापार	विवाह	धरती	पहले	पुराना
पहचान	इच्छुक	आदत	पलटना	घर
घायल	यात्रा	आशीर्वाद	आवेदन	असली

5. निम्नलिखित बांग्ला वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

(a) ভেবে চলেছি গত দুই তিন দিন ধরে।

(b) আমার পাশের সিটে একটি মেয়ে বসে আছে।

(c) অগত্যা আমিও উঠে দাঁড়ালাম।

(d) আপনাকে কোথায় দেখেছি বলুন তো?

(e) আমি তখন ক্লাস ইলেভেনে পড়তাম।

(f) সে ছেলে আমার অনেক উপকার করে গেছে

(g) মানুষের মন বড় বিচিত্র।

(h) তার নিজের মুখ এখন স্ক্রিন জুড়ে।

(i) প্লাটফর্ম ভিড়ে থিক থিক।

(j) কখনও চেষ্টা না করে হার মানবে না।

6. निम्नलिखित हिंदी वाक्यों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 10

(1) एक कहानी सुनाओ।

(2) तुम आजकल खेलने नहीं आते ?

(3) सड़क पर आज बहुत भीड़ थी।

(4) पूजा के पंडाल तैयार होने लगे हैं।

(5) मेरे घर में मरम्मत का काम चल रहा है।

(6) एक मजदूर औरत ने उस आदमी को डांटा।

(7) तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते?

(8) एक दिन और रुक कर जाना।

(9) यह बात तुम्हें किसने बताई?

(10) वह लड़का बहुत बदमाश है।

7. निम्नलिखित बांग्ला गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10+2=20

(1) আমাদেরও অবস্থা প্রায় একই রকম। তিনটে সাফারির প্রথমটায় বাঘের দেখা পাইনি দ্বিতীয়টাও শেষের মুখে পাওনা বলতে সকালে মাগধি জোনে মহামান বিটের বাঘের গরগরানি আর তার অপেক্ষায় রাস্তায় দাঁড়িয়ে থাকা হাড়-কাঁপানো ঠান্ডা জানুয়ারির সকাল। ফলে নরম রোদে গাড়িতে বসে শালের পাতার ফাঁক দিয়ে আলোর ঢুকে পড়া আর লাল মাটির ওপর জমে থাকা কুয়াশা সরে গিয়ে চারাগাছেদের বেরিয়ে আসা দেখতে মন্দ লাগছিল না তবে বিকেলের খিতৌলি জোনে সাফারিতে কিছু পাখি ছাড়া এ পর্যন্ত প্রাপ্তি বলতে বিস্তর ধুলো যাই হোক, সময় শেষ হয়ে আসাতে আমরাও গাড়ি ঘুরিয়ে বেরোবার পথ ধরলাম। কিছুটা এগোতে সামনে আরও গাড়ির দেখা মিলতে লাগল। এবং হঠাৎই দেখলাম, খানিকটা দূরে পরপর কয়েকটা গাড়ি দাঁড়িয়ে পড়ল, চিতলের অ্যালার্ম কলও শুনলাম বার তিনেক। যথারীতি আমাদের গাড়ির গতিও অন্য গাড়িগুলোর মতোই বেড়ে যেতে সময় লাগল না। আর বাকি গাড়িগুলোর পিছু নেওয়ার সঙ্গে সঙ্গেই দেখা পেলাম বেশ খানিকটা দূরে বড় বড় শালগাছের সামনে দাঁড়িয়ে আছে বাঘটা। গাইডদের পরস্পরকে অনুরোধ, আদেশ, ধমক আর ধন্যবাদসূচক শব্দের আদানপ্রদান সহ গাড়িগুলোর পারস্পরিক অবস্থান ঠিক করার ফাঁকেই বাঘটা বসে পড়ল। খানিকক্ষণ বসে থেকে উঠে জঙ্গলে ঢুকে পড়ল। কিন্তু গাড়ির ভিড় তখনও ওখানেই দাঁড়িয়ে কারণ আরও একটা বাঘ বসে আছে একেবারে রাস্তার ধারেই। তবে ভিড় খালি হতে দেরি হল না, কারণ ঘড়ির কাঁটায় পাঁচটা চল্লিশ এবং খিতৌলি জোন থেকে বেরোবার জন্য সময় আছে আর মিনিট পাঁচেক। বলা বাহুল্য গাড়ি ছুটল রাস্তার বাম্পের দিকে দৃকপাত না করে ক্যামেরা আর নিজেকে একই সঙ্গে শকটচ্যুত হওয়া থেকে বাঁচানোর পাঁচ মিনিটের লড়াইটা মোটেও উপভোগ্য হল না জঙ্গল থেকে বেরিয়ে ঝকঝকে পিচ রাস্তায় উঠে মুকেশজিকে জিজ্ঞেস করতে জানলাম এটা মহামান বিটের বাঘিনী আর তার ছানা। মহামান বিটটা মাগধি আর খিতৌলি দুটো জোনেই পড়ে

(2) কাঁটাকাঠিটা মোক্ষম জায়গায় গুঁজে দেওয়া। কাজটা যারপরনাই নিষ্ঠুর। তারপর ছোট্ট একটা টুসকি। পোকাটা ফড়ফড়িয়ে উড়ে পালাতে চাইত।

তার ওই প্রাণপণ ডানা কাঁপানোটাই ছিল আমাদের আমোদ। হাওয়া পোকা বলতুম। ফুড় ফুড় ডানার সে হাওয়া দীর্ঘশ্বাসের থেকেও কম জোরাল। তবুও কাঠিবিদ্ধ হাতপাখা হাত ফেরতা হত। তখন ফাইভ বা সিক্স। ছুটির দিনে একটা পোকা মানে মিনিট কুড়ির ক্যান্ডি ক্র্যাশ।

এসব মনে পড়ছিল জগদীশদাদুকে দেখে। অনেকদিন বাদে পাড়ায় ফিরেছি। সেদিন হালদারদের তুলসীমঞ্চে আড্ডা মারছিলাম। দেখি, দাদু। হন্তদন্ত।

‘জগদীশদাদু! কেমন আছ?’

তেড়েমেড়ে বুড়ো খিস্তি দিয়ে বলল, ‘মরছি নিজের জ্বালায়। ইনি এলেন পেছনে লাগতে!’ দাদু দ্রুত চলে গেল।

একটু অবাক হইনি তা নয়। ছোটবেলা থেকেই জগদীশদাদু বলি! ওটা যদিও আসল নাম নয়। হাওয়া পোকা নিয়ে আমাদের নিষ্ঠুর আমোদ দেখে দাদু একদিন রেগে বলেছিল, ‘প্রাণ দিতে পারো না, প্রাণ নিচ্ছ কেন?’ তখন সবকিছু হেসে উড়িয়ে দেওয়ার বয়স। হেসেই বলেছিলাম, ‘প্রাণ নিচ্ছি না। হাওয়া খাচ্ছি, জগদীশদাদু।’ ক্লাসের পাঠে সদ্য পড়েছি জগদীশচন্দ্র উদ্ভিদের প্রাণ নিয়ে ভাবিত ছিলেন। সেদিন দাদু হো হো করে হেসে বলেছিল, ‘জগদীশদাদু? বেশ নাম।’

আজ রাগল কেন? অমর বলল, ‘দাদু হেব্বি কেস খেয়েছে।’

‘কেস মানে পুরো স্যুটকেস।’ তারকের হাসিতে শয়তানি।

আমি চুপ। অমর বলল, ‘দাদু বাবা হতে চলেছে।’ বুঝলাম, কিছু একটা রসাল বিষয় বাজারে ছড়িয়েছে। ঠাকুমা, মানে জগদীশদাদুর স্ত্রী অনেকদিন গত হয়েছেন। অবৈধ সম্পর্ক ছাড়া দাদুর বাবা হওয়ার চান্স নেই!

কিছুক্ষণ চুপ থেকে সুতো ছাড়ে অমর, ‘চাঁপাপিসি রে! দাদুকে দেখাশোনা করত। দাদুও এক ফাঁকে পিসিকে দেখে নিয়েছে। এখন দুই বাড়িতেই হেবি বাওয়াল।’

চাঁপা পাড়াতুতো পিসি। স্বামী পরিত্যক্তা। রোগাভোগা, চিরুনি কম পড়া চুল, বেশবাস ঢিলেঢালা। লোকের বাড়ি কাজ করে। কথা বললেই বোঝা যায়, মাথার একটা অংশে জন্মের সময়েই হাওয়া ঢুকে গিয়েছে। স্বামী ভদ্রলোকটি এক সন্তান-সহ পিসিকে বাপের বাড়িতে রেখে উধাও হয়ে যায়।

8. निम्नलिखित हिंदी गद्यांशों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 10

दफ्तर में जरा देर से आना अफ़सरों की शान है। जितना ही बड़ा अधिकारी होता है, उतनी ही देर में आता है; और उतने ही सबेरे जाता भी है। चपरासी की हाज़िरी चौबीसों घंटे की। वह छुट्टी पर भी नहीं जा सकता। अपना एवज देना पड़ता है। खैर, जब बरेली जिला-बोर्ड के हेड क्लर्क बाबू मदारीलाल ग्यारह बजे दफ्तर आये, तब मानो दफ्तर नींद से जाग उठा। चपरासी ने दौड़ कर पैरगाड़ी ली, अरदली ने दौड़कर कमरे की चिक उठा दी और जमादार ने डाक की किश्त मेज पर ला कर रख दी। मदारीलाल ने पहला ही सरकारी लिफाफा खोला था

कि उनका रंग [illegible] गया। वे कई मिनट तक आश्चर्यान्वित हालत में खड़े रहे, मानो सारी ज्ञानेन्द्रियाँ शिथिल हो गयी हों। उन पर बड़े-बड़े आघात हो चुके थे; पर इतने बदहवास वे कभी न हुए थे। बात यह थी कि बोर्ड के सेक्रेटरी की जो जगह एक महीने से खाली थी, सरकार ने सुबोधचन्द्र को वह जगह दी थी और सुबोधचन्द्र वह व्यक्ति था, जिसके नाम ही से मदारीलाल को घृणा थी। वह सुबोधचन्द्र, जो उनका सहपाठी था, जिसे [illegible] देने को उन्होंने कितनी ही चेष्टा की; पर [illegible] सफल न हुए थे। वही सुबोध आज उनका अफसर होकर आ रहा था। सुबोध की इधर कई सालों से कोई खबर न थी। इतना मालूम था कि वह फौज में भरती हो गया था। मदारीलाल ने समझा-वहीं मर गया होगा; पर आज वह मानों जी उठा और सेक्रेटरी होकर आ रहा था। मदारीलाल को उसकी मातहती में काम करना पड़ेगा। इस अपमान से तो मर जाना कहीं अच्छा था। सुबोध को स्कूल और कॉलेज की सारी बातें अवश्य ही याद होंगी। मदारीलाल ने उसे कॉलेज से निकलवा देने के लिए कई बार मंत्र चलाए, झूठे [illegible] बदनाम किया। क्या सुबोध सब कुछ भूल गया होगा? नहीं, कभी नहीं। वह आते ही पुरानी कसर निकालेगा। मदारी बाबू को अपनी प्राणरक्षा का कोई उपाय न सूझता था।

अथवा

अँधेरी रात के सन्नाटे में धसान नदी चट्टानों से टकराती हुई ऐसी सुहावनी मालूम होती थी जैसे घुमुर-घुमुर करती हुई चक्कियाँ। नदी के दाहिने तट पर एक टीला है। उस पर एक पुराना दुर्ग बना हुआ है जिसको जंगली वृक्षों ने घेर रखा है। टीले के पूर्व की ओर छोटा-सा गाँव है। यह गढ़ी और गाँव दोनों एक बुंदेला सरकार के कीर्ति-चिह्न हैं। शताब्दियाँ व्यतीत हो गयीं, बुंदेलखंड में कितने ही राज्यों का उदय और अस्त हुआ, मुसलमान आये और बुंदेला राजा उठे और गिरे-कोई गाँव कोई इलाका ऐसा न था जो इन दुरवस्थाओं से पीड़ित न हो मगर इस दुर्ग पर किसी शत्रु की विजय-पताका न लहरायी और इस गाँव में किसी विद्रोह का भी पदार्पण न हुआ। यह उसका सौभाग्य था।

अनिरुद्धसिंह वीर राजपूत था। वह जमाना ही ऐसा था जब मनुष्यमात्र को अपने बाहुबल और पराक्रम ही का भरोसा था। एक ओर मुसलमान सेनाएँ पैर जमाये खड़ी रहती थीं दूसरी ओर बलवान राजा अपने निर्बल भाइयों का गला घोंटने पर तत्पर रहते थे। अनिरुद्धसिंह के पास सवारों और पियादों का एक छोटा-सा मगर सजीव दल था। इससे वह अपने कुल और मर्यादा की रक्षा किया करता था। उसे कभी चैन से बैठना नसीब न होता था। तीन वर्ष पहले उसका विवाह शीतला देवी से हुआ था मगर अनिरुद्ध विहार के दिन और विलास की रातें पहाड़ों में काटता था और शीतला उसकी जान की खैर मनाने में। वह कितनी बार पति से अनुरोध कर चुकी थी कितनी बार उसके पैरों पर गिर कर रोई थी कि तुम मेरी आँखों से दूर न हो मुझे हरिद्वार ले चलो मुझे तुम्हारे साथ वनवास अच्छा है यह वियोग अब नहीं सहा जाता। उसने प्यार से कहा, ज़िद से कहा, विनय की मगर अनिरुद्ध बुंदेला था। शीतला अपने किसी हथियार से उसे परास्त न कर सकी।

अँधेरी रात थी। सारी दुनिया सोती थी तारे आकाश में जागते थे। शीतला देवी पलंग पर पड़ी करवटें बदल रही थीं और उसकी ननद सारन्धा फर्श पर बैठी मधुर स्वर से गाती थी।

9. निम्नलिखित मुहावरों / लोकोक्तियों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

অতি দর্পে হতা লঙ্কা

ভাবিয়া করিও কাজ, করিয়া ভাবিও না

চোখ মনের আয়না

যে যায় লঙ্কায় সেই হয় রাবণ

দু নৌকায় পা দিয়ে চলা

লোভে পাপ পাপে মৃত্যু

ডাঙ্গায় বাঘ জলে কুমির

কাঁটা দিয়ে কাঁটা তোলা

ধান ভানতে শিবের গীত

অর্ধ সত্য মিথ্যা অপেক্ষা ভয়ঙ্কর

बांग्ला-हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एमटीटी-003)

कार्यक्रम कोडः पीजीसीबीएचटी

पाठ्यक्रम कोडः एमटीटी-003

पूर्णांकः 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 10

1. बांग्ला-हिंदी अनुवाद में मातृभाषा के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए समझाएं कि उसमें होने वाली भूलों से कैसे बचा जा सकता है।

अथवा

पत्रों और सूचनाओं का अनुवाद करते समय किस तरह की मुश्किलें पेश आती हैं, समझाएं।

2. निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला और हिंदी पर्याय लिखते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 10

ध्यान	आदर	पारदर्शी	कृति	अपवाद
मूल	चमत्कार	हिंसा	संदेश	भावना

3. निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 5+2=10

(क)

দরজায় জোরালো আওয়াজে ঢুলুনিটা ছুটে গেল শিশিরের।

কী ব্যাপার? কী চাই এখানে?

ক্লান্তিতে ঘুমিয়েই পড়েছিল নিরিবিলি পেয়ে।

এক্ষুনি এই অঞ্চল থেকে পালাতে হবে শিশিরকে।

বাঁ দিকের কাঁধের নিচ থেকে বুক পর্যন্ত ছেঁড়া।

কাঁপা হাতে লোটটা নিয়ে কাঁপা গলাতেই আনতে চাইল মেয়েটা।

সামনে জলের কল।

দৃশ্যত নিরুদ্ধ হয়ে, তাকেও মুখর করে রাখি

কী করব ফিরে? বাড়িতে ভাল লাগে না।

বন্ধুর বাড়ি যাব। রাতে ফিরব।

(খ)

মা বলেছে বাবাকে বলিস না।

না মানে, তুমি রাগ করছ।

অমি এভাবেই প্রতিবার শুরু আর শেষ করে।

আমারও তো কতকিছু খারাপ লাগে।

সময় করে ঠিক নাস্তা খেয়ে নিও।

ফিরতে দেরি কোরো না।

এরা তোমার সব ভালবাসার লোকজন।

কোথাও বসন্তবৌরির ডাক কানে আসে।

আমি দম ফেলার ফুরসত পাই না

তোমার ব্যাপারে কিছু বলি না ঠিকই

4. निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10+7=70

(A)

বৃষ্টির শব্দ যেন। টুপ টাপ, টুপ টাপ। একটা একটা করে বার্তা আসছে অনির্বাণের মোবাইলে সকালে নেট অন হতেই ইথার থেকে বৃষ্টির ফোঁটার মতো যেন ঝরে পড়ছে তারা। অফিস বেরনোর আগে, টুকটাক গোছগাছের মধ্যে এই শব্দগুলো অনির্বাণের বেশ লাগে।

'এই শুরু হল।' ভনিতার গলা। কিচেনে পাঁউরুটিতে স্যান্ডউইচ স্প্রেড লাগাচ্ছে

'যত সব পরীদের মেসেজ। ভাবি, এদের কি আর কাজ নেই। আমি দম ফেলার ফুরসত পাই না আর বিবিরা সব রাত জেগে মেসেজ পাঠাচ্ছেন।'

'ইশারা অবিরত বুঝলে তনি।' ফোড়ন কাটে অনির্বাণ।

'হ্যাঁ, নিঃশব্দের তর্জনীটাও ভুলো না যেন। ওটাও আছে' তনিমার পালটা জবাব।

সকালের এই সময়টা তনিমা আর অনির্বাণ তবু একটু কথা বলার সময় পায়। ছেলেকে স্কুলে ছেড়ে এসে অনির্বাণ নিজের সারাদিনের কাজের প্রস্তুতি নেয় আর তনিমারও কাজে বেরনোর আগে একটু মুখোমুখি দাঁড়ানোর অবকাশ।

'পরী না কি যেন বললে,' বলে হাসে অনির্বাণ।

'কেন, হাসি কিসের। এরা তোমার সব ভালবাসার লেকিজন। যাদের সঙ্গে ওই ফোনে তোমার সারাক্ষণ টুংটাং চলছে'

'কী যে বলো! আজকাল বোঝোই তো। মেয়েরা সব ব্যাপারেই এগিয়ে যাচ্ছে চাকরিতে আসছে সব। তুমিও সেকেলে রয়ে গেলে খালি খালি সন্দেহ।'

'সেকেলে টেকেলে বুঝি না। তোমার ব্যাপারে কিছু বলি না ঠিকই, কিন্তু আমি কিছু বুঝি না, এটা ভেবো না। এত সব মেসেজ, সব অফিসের নিশ্চয়ই নয়। কিসের এত কথা বাড়িতে কি এদের কথা বলার কেউ নেই নাকি তোমার সঙ্গেই বা এদের এত কথা কিসের?'

(B)

আমাদের পিছনে একটা স্কুটার থামার শব্দ। ঘাড় ঘোরাল সবাই। কৌতূহলী হয়ে আমিও তাকালাম।

সাদা স্কুটি। বছর চব্বিশ-পঁচিশের এক যৌবনবতী। পরনে হাঁটু পর্যন্ত নামছে কেপ্রি, ওপরে হাতকাটা হালকা দুধ-সাদা টপ। বুকের ওপর কালচে এক নিগ্রোর আবছা মুখ। টান-টান টাইট পোশাক। চোখে রোদ-চশমা। ডান হাতের কবজিতে রিস্টলেট। লুকনো মোবাইল থেকে দু'কানে গোঁজা দুটো মাইক্রোফোন। শরীরী আবেদন উপচে পড়ছে তার চাল-চলন আর পোশাক-আশাকে।

নিমেষে চোখ সরিয়ে নিলাম। শরীরের ভেতর কেমন যেন গা-গুলনো ভাব।

পাশের খদ্দেরটি চলে যেতেই সে ঢুকে দাঁড়াল আমার গা ঘেঁষে। তার শরীরের পারফিউম একেবারে ভাল লাগছে না আমার। বিশ্রী অস্বস্তি হচ্ছে এদিক-ওদিক এলোমেলো চেয়ে দেখলাম, প্রায় সকলেরই চোখ তার পোশাক আর উদ্ধত শরীরে।

তরুণ কাউন্টারের বাইরে এল। আমার পায়ের সামনে থাকা ছোট পেটিটা তুলে নিয়ে ভেতরে ঢুকল।

পেটিটা সরে যেতেই মেয়েটি আরও স্মার্ট হয়ে দাঁড়াতে গিয়ে আমার পায়ে তার পা ঠেকল।

তাচ্ছিল্যভাবে, চোখে রাগ নিয়ে তাকালাম।

কিন্তু এ কী! নিমেষে মেয়েটি কোমর পর্যন্ত শরীর ভেঙে মাথা নুইয়ে দু'হাত দিয়ে আমার দু'পায়ের পাতা ছুঁল। প্রণাম করে দাঁড়িয়ে উঠে, লজ্জিত মুখ নিয়ে বিনীত স্বরে বলল, 'আমি দেখতে পাইনি জেঠু।'

তার ভেতরের পোশাক দেখে আমি হতচকিত! হতবাক!

মাথায় হাতের স্নেহ-স্পর্শ দিয়ে বললাম, 'বড় হও। ভাল হও।'

(C)

স্কুলে ঢোকার পর মোহনদাসের এক ডানপিটে বন্ধু হল, নাম শেখ মেহতাব। শেখজাদা বলল, লম্বা-চওড়া হতে হলে মাংস খেতে হবে, মোহনদাস নিতান্তই ছোটখাটো। তখনকার দিনে ছেলেদের মুখে মুখে একটা গুজরাতি ছড়া চলত: 'ইংরাজ রাজত্ব করে, দেশীরে রাখে দাবিয়া/ লম্বায় সে পুরা পাঁচ হাত, মাংসাহারী বলিয়া।' গায়ে জোর করার আগ্রহ অন্যান্য ছেলের মতো মোহনদাসেরও ছিল। সে বন্ধুর কথায় রাজি হল। মেহতাব মোহনদাসকে নিয়ে অনেক দূরে নদীর ধারের একটা বাড়িতে মাংস রান্না করে খাওয়াল। মদিরার মুখে রুচল না। বিলেতে ব্যারিস্টারি পাশ করতে যাওয়ার সময় গাঁধীকে দিয়ে তাঁর মা প্রতিজ্ঞা করিয়ে নিলেন, মদ্য-মাংস খাবে না। ইনার টেম্পল-এর ডিনারে চারজনের টেবিলে থাকত দু'টি মদের বোতল এবং হয় গোরু নয় ভেড়ার মাংস। নিরামিষ খাবারের বায়না করায় গাঁধী খেতে পেলেন বাঁধাকপি ও আলুর ঘ্যাঁট। মদের বদলে তিনি তাঁর টেবিলের সঙ্গীদের কাছ থেকে চেয়ে নিতেন তাঁদের ফলমূলের ভাগ। ইংল্যান্ডে তখন ভেজিটেরিয়ান খাবার আন্দোলন শুরু হয়েছে, তার শামিল কোয়েকার ও অহিংসবাদী শান্তিকামীদের দল। গাঁধী ভিড়ে গেলেন সেই দলে ওই দলে তাঁর কয়েকজন ইংরেজের সঙ্গে বন্ধুত্ব হল। ফলে, তাঁর মনে ইংরেজদের প্রতি কোনও বিদ্বেষ রইল না। মদিরা থেকে মহাত্মার অহিংসবাদ বিবর্তনের সম্পূর্ণ ইতিহাস এটা অবশ্যই নয়, কিন্তু একে বাদও দেওয়া যায় না। এ ছাড়া যৌনতা ও হিংসার সংস্রব নিয়ে তাঁর যে-ধারণা জন্মেছিল, সেই মনস্তত্ত্ব এবং অন্য আরও অনেক কিছু উপাদান নিশ্চয়ই ছিল।

পরবর্তী অধ্যায়ে আমরা দেখি, দক্ষিণ আফ্রিকাতে গাঁধী সাদা জনতার হাতে কিল চড় লাথি ঘুসি পচা মাছ এবং ঘোড়ার চাবুকের শিকার। একবার সাদাদের আর-একবার পাঠানদের হাতে পড়ে তাঁর প্রাণ যেতে বসেছিল। ভগবানে অহিংসার চরম মূল্য দিতে মহাত্মাজি প্রস্তুত।

(D)

বলতে বলতেই সে তর্জনী দিয়ে কলুর দিকে নির্দেশ করল। তার সঙ্গে খলখল করে কী ভয়াবহ হাসি! কলুর ততক্ষণে গায়ের রক্ত হিম হয়ে গেছে। সে আর কোনও দিকে না তাকিয়ে ছুটেছিল নিজের বাড়ির দিকে ফিরে এসে এক কলসি জল খেয়ে বিছানার ওপর চিত হয়ে শুয়ে পড়েছে! সে যে জঙ্গলের কারবারি, তা দালালডালাল জানল কী করে! তবে কি তার কুকীর্তির হিসেব ভগবানের সঙ্গে সঙ্গে এ দেশের দানবও রাখছে?

এ ছিল গতকালের ঘটনা। আর আজ সকালে এই কাণ্ড! দরজার সামনে একখানা অদ্ভুত জিনিস। কলু ভেবে পায় না কী করবে! এ দেশ তাকে আপন করে নেবে না! আবার ছেড়েও দেবে না। অন্যায় কি একা সে করে? আর এমন কী অন্যায় করেছে কলু যে, সকলকে ছেড়ে দালালডালালের দৃষ্টি তার ওপরেই পড়বে! অন্যায় বলতে তো একমাত্র মণিরাম তামাংকে চোরাই কাঠ সরবরাহ করা। অল্পবয়স থেকেই তো এই বৃত্তি নিয়ে আজ এতখানি বড় হয়েছে কলু! অনেক পয়সা করেছে। সে অর্থ দেখলে গরিব মানুষদের চোখ টাটায়। বলে, 'দিকুর পাপের রক্ত ডাঁলপালা ছড়ায়েছে। সাঁচা মুড়ার খুন নাই কলুর গায়ে থাকলি বেইমানি করে না। ওরে ওর মা ধরতি না ধরায়ে তিস্তার জলে ভাসায়ে দিলে ভাল করত রে।'

না, সাঁচা মুক্তার খুন নেই! কলু আজন্ম এই কথা শুনে আসছে। জন্ম থেকেই তার এই বিড়ম্বনার সূত্রপাত। কলুর ধারণা, তার জন্মটাই আসলে বিড়ম্বনা! কিন্তু তাতে তো তার কোনও হাত নেই! জন্মদাত্রী যে মা, তার কাছ থেকেও তো সেই একই কথা শুনেছে সে। তার দোষ একটাই, সে দিকুদের সন্তান। দিকুরা তার মাকে জোর করে তুলে নিয়ে গিয়েছিল ফুর্তি করার জন্য! আর সেই ফুর্তির ফলাফল হিসেবে জন্ম নিল কলু। সে যখন শিশু, তখন প্রায়ই মায়ের কাছে গিয়ে কোলে চড়তে চাইত। মা কখনও কোলে নেয়নি। ফুঁসে উঠে বলত, 'তু মোর বেটা না!

(E)

কৈশোরের কথা মনে পড়ছে। রাতের আকাশের দিকে তাকিয়ে ভাবতাম কয়েক আলোকবর্ষ দূরের এক সৌরমণ্ডলের কোনও গ্রহে গিয়ে দাঁড়ালে কেমন লাগবে! চেনা পৃথিবী ছেড়ে সম্পূর্ণ অন্য রকম কোনও ভূখণ্ডে দাঁড়ানোর অভিজ্ঞতা কেমন হতে পারে কল্পনায় সেদিন তা অনুভব করতে পারিনি। কিন্তু আজ বোধ হয় পারছি পৃথিবীর পেটের মধ্যেকার এই পাতালপুরীতে দাঁড়িয়ে। আমার চেনা জগতে এমন দৃশ্য কখনও চোখে পড়েনি। মাথা থেকে প্রায় চল্লিশ ফুট উপরে বেলে পাথরের বুক চিরে তৈরি হওয়া সেই ফাটল দেখা যাচ্ছে। একটু আগে তারই মধ্যে দিয়ে আমরা নেমে এসেছি। সেই ফাটল এত সরু যে নামার সময় দুই কাঁধ সামনের দিকে বাঁকিয়ে শরীরকে সংকুচিত করতে হয়েছে। নচেৎ পাথরের গায়ে ঘষা খাবার ভয়। সেই ফাটল দিয়ে নিচে চুঁইয়ে আসা সূর্যের আলোয় চারপাশের রঙিন প্রাকৃতিক ভাস্কর্য দেখতে দেখতে বাস্তব অবাস্তবের সীমারেখা কখন যেন মিলিয়ে গেছে। ভাবছি, পৃথিবীতে আছি তো! নাকি স্বপ্নে চলে এসেছি ভিন্ন কোনও গ্রহে! এই বিস্ময় আমার একার নয়, সঙ্গী সকলের।

দাঁড়িয়ে আছি মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের দক্ষিণ-পশ্চিমাঞ্চলের রাজ্য অ্যারিজোনার অ্যান্টিলোপ ক্যানিয়নের মধ্যে। সারা পৃথিবীর পর্যটকদের কাছে এই রাজ্যের প্রধান আকর্ষণ হল কলোরাডো নদীতে সৃষ্ট বিশাল নদীখাত-গ্র্যান্ড ক্যানিয়ন। এই দুই ক্যানিয়নের তুলনা চলে না কারণ দুয়ের বৈশিষ্ট্য আলাদা। যেমন দেওয়াল-জোড়া ম্যুরাল পেন্টিং-এর সঙ্গে ছোট মিনিয়েচার। অ্যান্টিলোপ ক্যানিয়নের অবস্থান অ্যারিজোনার যে-অঞ্চলে তার স্থানীয় প্রশাসনিক দায়িত্ব ন্যাভাহো ইন্ডিয়ান জনগোষ্ঠীর হাতে। এই দেশের কয়েকশত আদিবাসী গোষ্ঠীর অন্যতম বৃহত্তম গোষ্ঠী এই ন্যাভাহোরা।

(F)

কলকাতা আর বাঙালিদের নেই! এমন এক মন্তব্যে যে এখনও লোকজন স্পষ্টতই নির্দ্বিধায় দু'টি দিকে ভাগ হয়ে যেতে পারে, তার প্রমাণ এবারের 'দেশ'-এর আড্ডা। বক্তারা সকলেই মহিলা, এবং প্রত্যেকেই অফিসে কর্মরত। সোজাসাপটা মতামতের তর্ক-বিতর্ক চলল ডালহৌসি স্কোয়্যারে, এক রোদঝলমল শীতসকালে। বক্তাসংখ্যা পাঁচ - কল্পনা বাগচী, কল্পনা সরকার, কেয়া কর্মকার, শঙ্করী হালদার এবং ঋতা মুখোপাধ্যায়। পাঁচজন অনেকদিনের বন্ধু, একই প্রতিষ্ঠানের কর্মী।

'নিশ্চয়ই, কলকাতার পথেঘাটে, ট্রামে বাসে কোথাও বাংলা ভাষাই তো শুনতে পাই না,' শঙ্করী হালদারের স্পষ্টভাষণ, 'বাংলা কথা বলতে বাঙালিরাই লজ্জা পাচ্ছে। কী করে বলি কলকাতা বাঙালিদের!'

তাঁকে সঙ্গে-সঙ্গে সমর্থন করলেন কেয়া। 'আরে, কলকাতার অফিসগুলোও তো বাঙালিদের নেই। সব জায়গায় ইংরেজি হিন্দি বাংলা মিশিয়ে একটা জগাখিচুড়ি ভাষা চলছে। বাঙালি মিষ্টির দোকানগুলো পর্যন্ত ঝাঁপ ফেলে দিয়েছে, সেখানে দিব্যি ব্যবসা চালিয়ে যাচ্ছে বিহার, উত্তরপ্রদেশের মানুষ।'

কল্পনা বাগচীর জোরালো অভিমত, 'আরে, এখানেই তো কলকাতার গর্ব! সর্ববর্ণ সর্বধর্ম নিয়ে চলেছে মহানগর। কলকাতা সকলকে সম্মান করে। ভারতের অন্য-অন্য শহরগুলো কিন্তু তা করে না।

কল্পনা সরকার: পশ্চিমবঙ্গবাসী হিসেবে আমি গর্বিত। বিভিন্ন জায়গা থেকে লোক তো আসবেই। কিন্তু কলকাতায় বাঙালিদের সংখ্যাই যে সবচেয়ে বেশি, সে বিষয়ে তো আর কোনও সন্দেহ নেই!

শর্বরী: আছে, সন্দেহ আছে। লেক মার্কেট দক্ষিণ ভারতের, ফুটপাথ বিহারের, ল্যান্সডাউন গুজরাতের, বড়বাজার রাজস্থানের, ভবানীপুর পঞ্জাবের...বাঙালি কোথায়!

একথায় পাঁচজনই হেসে ওঠেন জোরে। ভুলে যান তর্ক। হাতে-হাতে ঘোরে বিস্কিট। খানিক বিরতির পর আবার শুরু হয় কথা। তখন আবার দলভাগ, আবার জোরালো ওপিনিয়ন, আর, আরও একবার জেগে ওঠে এ-শহর!

(G)

কথা হচ্ছিল গোরুর গাড়ির চাকার লোহার বেড়ি পরানো নিয়ে। চাকার পিঠে এক ইঞ্চি মাপের বিটতোলা কাঠের সঙ্গে সেঁটে করা গোলাকার লোহার পাত। দেখলে মনে হবে, মেয়েদের হাতে শাঁখা পরানোর মতোই জলভাত। একটু-আধটু লাগতে পারে। সাবান বা গ্লিসারিন দিয়ে ধুয়ে দিলেই ঝামেলা শেষ।

মন্দারের কথায় দু'রকম সাড়া মিলল।

কপালে নেমে আসা কুচো চুল সরিয়ে রিমি হাসে, 'শহুরে বাবু এক পিস গোরুর গাড়ি দেখেছে। অমনি বিশেষজ্ঞের মতামত শুরু হয়ে গেল!'

গগনের গলায় অন্য সুর, 'গাঁয়েঘরে আজকাল গোরুর গাড়ির চল কমে গেছে। চাষবাসে যেটুকু লাগে। তবে বাবু, বেড়ি পরানো অত সহজ কাজ নয় বটে। পাকা হাত লাগে। আগুনে পুড়িয়ে মাপটাপ বুঝে পরাতে হয়। উনিশ-বিশ হলে চলবেনি। দু'দিন গড়াতে না-গড়াতেই চাকার সঙ্গে ছাড়াছাড়ি।'

মন্দারের পিঠে চিমটি কাটে রিমি। চোখের ইঙ্গিতে বুঝিয়ে দিল, ওদের উদ্দেশ করেই রসিয়ে কথা বলছে গগন।

গগনের ভ্যানরিকশায় ওরা দু'জন সওয়ারি। গগন রামনগর থেকে গঞ্জের হাটে মালপত্র বওয়ার কাজে ব্যবহার করে। শুরুতেই বেঁকে বসেছিল গগন, 'এটা মালগাড়ি, লোকাল ট্রেন নয়।' আজ লাট করে এক গ্রাম থেকে ডাব নিয়ে এসেছিল সে। ডাউন ট্রিপে কোনও মাল নিয়ে যাওয়ার অর্ডার পায়নি। রিমির মিষ্টি অনুরোধে রাজি হয়ে গেল।

'আজ্ঞে, কী কইলেন, দিদি?'

'কেয়াসারি যাবে?' মন্দার জানতে চেয়েছিল।

রিমি মাথা নেড়ে বলেছিল, 'কেয়াসারি নয়, পটুয়াসাহি।'

মাথা নেড়েছিল গগন, 'পটুয়াসাহি গাড়ি যাবেনি।'

'কেন?'

'কেয়াসারি পর্যন্ত টেনেটুনে চালিয়ে দিবি। তারপর খাল পেরোতে হবে। বাঁশের নড়বড়ে সাঁকো। লোকে হেঁটে পার হতেই ভয় পায়। আমার মালগাড়ি তো যেতেই পারবেনি।'

ঝিনির কপালে ভাঁজ, 'তাহলে পটুয়াপাড়ি যাওয়ার রাস্তা কোনটা?'